जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र 2021–22

अनुसंधानकर्त्ता–

श्रीमती रचना

रा.उ.प्रा.विद्यालय, खण्डवा पट्टा पीथीसर, चूरू

अनुसंधान का शीर्षक– '' उच्च प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में अंग्रेजी भाषा में सतत् लेखन कौशल (cursive writting skill) का प्रयास।''

शोध समस्या की पृष्ठभूमि–

अधिकतर हम समझ लेते हैं कि बच्चा 1 से 5 तक सभी दक्षताओं को पूर्ण कर चुका होता है, परन्तु जब उनका विद्यालय में शैक्षिक स्तर देखा जाता है, तो यह देखने में आता है कि कहीं न कहीं वह कुछ दक्षताओं को पूर्ण किये बिना ही अधिकांशतः अगली कक्षा में प्रोन्नत हो जाते हैं जिसके कारण बच्चों में शैक्षिक उपलब्धि न्युन होने के कारण आत्मविश्वास में कमी होती हैं।

अध्यापकों को शिक्षण के अतिरिक्त अन्य शिक्षणोत्तर कार्यो में जैसे आत्मरक्षा प्रशिक्षण, मेटोंर टीचर प्रशिक्षण, मीना मंच प्रशिक्षण, स्काउट एण्ड गाईड आदि व कोरोना काल के कारण बच्चों की पढ़ाई में निरन्तरता की कमी देखी गई व पाया गया की बच्चों में लिखावट सुधार की बहुत आवश्यकता है। इसके सुधार के लिए अध्यापक द्वारा बार–बार कॉपी में cursive writting का अभ्यास करवाया गया व वर्तनी लेखन अशुद्धियों में सुधार करवाया गया अध्यापिका द्वारा श्यामपट्ट पर समझाया गया।

शोध की आवश्यकता व महत्व–

अनुसमर्थन के दौरान कक्षा 8 में शोधार्थी ने अंग्रेजी भाषा में मौखिक रूप से प्रश्न पुछे जिस पर बच्चों ने कोई संतोषजनक उतर नहीं दिया, जब शोधार्थी ने छात्रों को उन्ही की किताब में से एक श्रुतलेख लिखवाया तो अधिकतर बच्चों द्वारा स्पेलिंग की गलतियां पाई गई, उन्हे विराम चिन्हों का बिल्कुल भी ज्ञान नही था।

तदोपरान्त शोधार्थी द्वारा श्यामपट्ट पर एक गद्यांश लिखवाया गया और बच्चों को अपनी कॉपी में उतारने को कहा गया, परन्तु अधिकांश विद्यार्थियों ने उसमें भी गलतियां की, जिनमें उनको कई वर्ण कैसे लिखे जाते है, इसका ज्ञान नहीं था अतः शोधार्थी ने उक्त कमियों के कारण इस विषय का क्रियात्मक शोध करने का चुनाव किया।

समस्या सीमांकन–

चूरू जिले के गांव खण्डवा पट्ट पीथीसर के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय के कक्षा 8 के 10 विद्यार्थी।

शोध उद्देश्य–

1. छात्र अंग्रेजी भाषा के वर्णो को चार लाईन कॉपी में cursive writting लिख सकेंगें।
2. छात्र अंग्रेजी वर्णो को मिलाकर शब्द लिख सकेंगें।
3. छात्र शब्दों को मिलाकर वाक्य लिख सकेंगें।
4. छात्र विराम चिन्हों का प्रयोग कर सही लेखन कर सकेंगें।
5. छात्र सुन्दर लेख में गद्यांश लेखन कर सकेंगें।
6. छात्र अंग्रेजी शब्दों का शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण करना सीख सकेंगें।

क्षेत्र (परिसीमन) –

खण्डवा गांव के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय के कक्षा–8 के 10 छात्र व छात्राओं को लिया गया है। अनुसंधानकर्ता द्वारा किया गया शोध शैक्षणिक विषय के अन्तर्गत आता है।

शोध समस्या के कारण एवं साक्ष्य –

क्र.स.	समस्या के कारण	साक्ष्य
1.	शिक्षक को शिक्षण के अतिरिक्त अन्य शिक्षणोत्तर कार्यो में सलंग्न होने के कारण शिक्षण कार्य सुचारू रूप से नहीं हो रहा है।	कक्षा–8 के 10 छात्र–छात्राओं की अभ्यास पुस्तिका
2.	घर पर परिवेश शिक्षित न होने के कारण।	मौखिक–लिखित कार्य cursive writting की अभ्यास पुस्तिका।
3.	बच्चों की अंग्रेजी विषय में रूचि न होना।	चॉक– लेखन हेतु ब्लेकबोर्ड – अभ्यास हेतु।
4.	ग्रामीण परिवेश में छात्रों को उचित मार्गदशर्न न मिलना।	शिक्षक का अनुभव।

क्रियात्मक परिकल्पना –

1. विद्यार्थियों को बार–बार अभ्यास कराकर लेखन कौशल का विकास किया जायेगा।
2. शुद्ध रूप से वर्णो को लिख सकेंगे।
3. वर्णो के मेल से अक्षरों का निर्माण कर सकेंगे।
4. विद्यार्थियों में शैक्षणिक कौशल का विकास हो सकेगा।

शोध उपकरण –

अवलोकन के द्वारा

1. साधारण वर्णमाला A to Z (capital letter)
2. साधारण वर्णमाला a to z (small letter)
3. cursive वर्णमाला A to Z (capital letter)
4. cursive वर्णमाला a to z (small letter)
5. Joining cursive Alphabets
6. शब्द
7. साधारण वाक्य

8. गद्यांश।

क्रियात्मक परिकल्पना के परीक्षण हेतु कार्य योजना –

शोधार्थी ने समस्या समाधान हेतु क्रियात्मक शोध का क्रियान्वयन निम्नवत है।

क्र.स.	गतिविधि	दिन
1.	कक्षा–8 के विद्यार्थियों से अंग्रेजी भाषा में वार्तालाप मौखिक वार्तालाप, लेखन व सुलेख लिखवाया जाएगा।	02
2.	कक्षा –8 के विद्यार्थियों को लेखन कौशल विकास हेतु साधारण बड़ी व छोटी अंग्रेजी वर्णमाला श्यामपट्ट पर लिखकर बच्चों को चार लाईन की कॉपी पर लिखवाया जाएगा।	02
3.	छात्रों को cursive writting में बड़ी व छोटी अंग्रेजी वर्णमाला श्यामपट्ट पर लिखकर बच्चों द्वारा चार लाईन की कापी में अनुकरण कराकर अभ्यास कराया जाएगा।	02
4.	छात्रों को छोटी वर्णमाला व शब्दों को लिखाकर अभ्यास करवाया जाएगा।	03
5.	छात्रों को उनकी किताब से गद्यांश उतारने के साथ–साथ व्याकरण संबंधी त्रुटियों का सुधार किया जाएगा।	03
6.	अवलोकन के पश्चात् उपरोक्त गतिविधियों का अभिलेखीकरण किया जाएगा।	03

निष्कर्ष –

उपरोक्त गतिविधियां करने के उपरान्त यह परिणाम निकला कि सभी बच्चों में लिखने की दक्षता विकसित हो गई है। सभी बच्चें cursive writting कर पा रहें है। विद्यार्थियों में श्रुतलेख भी बिना गलती किये लिख पा रहे है छात्रों के शब्दकोश में भी वृद्धि हुई है। तथा विद्यार्थी सुन्दर लेख में लेखन कार्य कर पा रहे है।

सहायक सामग्री के प्रयोग से न केवल बच्चे लाभान्वित होते है। अपितु शिक्षक भी शिक्षण कार्य करवाने में रूचि लेते है अतः हमें सदैव लेखन कौशल विकसित करने हेतु प्रयासरत रहना चाहिए।

शैक्षिक निहितार्थ –

इसमें शोधकर्ता की समस्या की पहचान करने तथा उसका कैसे निवारण किया जाए। यह स्पष्ट हो गया है। छात्रों/प्रशिक्षुओं को इसका बहुत लाभ मिलेगा। शिक्षकों को भी इसका लाभ मिलेगा। शिक्षक निरन्तर अभ्यास द्वार बच्चों के लेखन कौशल में विकास कर सकेंगे। विद्यार्थियों में लिखावट का सुधार हो सकेगा।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान ,चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र

अनुसंधान का शीर्षकः–

" राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, तेहनदेसर विद्यालय परिवेश आकर्षक बनाने का प्रयास"

अनुसंधान कर्ता

जयप्रकाश अध्यापक(MA B. ED)

रा. उ. मा. वि. तेहनदेसर, बीदासर

मो. 9829435940

समस्या का शीर्षकः–

रा. उ. मा. वि. तेहनदेसर, चूरू के विद्यालय परिवेश को आकर्षक बनाने का प्रयास ।

1. पृष्ठभूमि एवं औचित्य/महत्वः–

किसी भी विद्यालय में पहुंचते ही सर्वप्रथम उसका बाहय सौन्दर्यकरण प्रभावित करता है सुंदर फूलों के पौधे मन में अलग ही खुशी पैदा कर देते हैं। मैंने विद्यालय में देखा कि जगह –2 कागज के टूकड़े तम्बाकू के रेपर बिखरे पड़े है। दिवारों पर जगह –2 धब्बे व हाथों के निशान है । ऐसे में जब में दिवार के पास खड़ा होता हूं तो ऐसा लगता है कि कहीं कपड़े खराब ना हो जाएं, फर्नीचर पर धूल –मिट्टी रहती है। ऐसे में कक्षा– कक्ष में प्रवेश भी नहीं कर पाता हूं। ऐसी ही स्थिति अन्य अध्यापकों व बच्चों की होगी तो ऐसी स्थिती में वे विद्यालय में कैसे रह पाते होंगे।

हर व्यक्ति यह चाहता है कि उसका बच्चा साफ, स्वच्छ परिवेश में रहे परन्तु इस विद्यालय को देखकर कोई भी अभिभावक यह कल्पना भी नहीं कर सकता की उसका बच्चा इस परिवेश में स्वच्छ व स्वस्थ रह सकता है। ऐसी स्थिती में अभिभावकों द्वारा बच्चे का विद्यालय में प्रवेश करवाना मजबुरी है क्योंकि पास में कोई अन्य शिक्षण संस्था नहीं है। परन्तु विद्यालय का यह वातावरण बच्चे का अधिगम के प्रति रूचि, विद्यालय में आने के प्रति अरूचि पैदा करते है। ऐसी स्थिती मे मैं यह सोचने को मजबुर हूं कि अगर कोई अन्य व्यवस्था हो जाए तो विद्यालय में प्रवेश नगण्य हो जायेगा। अतः यह सब मुझे यह सोचने पर मजबुर कर रहा है कि विद्यालय परिवेश को कैसे आकर्षक , स्वच्छ व सुंदर बनाया जाए इसके लिए प्रयास करने की आवश्यकता है।

2. समस्या सीमांकनः–

रा. उ .मा. वि. तेहनदेसर के विद्यालय परिवेश को आकर्षक, सुंदर बनाने से समन्धी समस्या है।

3. शोध के उद्देश्यः–

1. शिक्षक एवं छात्रों में विद्यालय परिवेश आकर्षक व सुंदर बनाने की आवश्यकता के लिए प्रेरित करने

का प्रयास।

2 विद्यालय प्रांगण को आकर्षक व सुदर बनाने की अपेक्षाओं को अनुभूत करना व उसे क्रियान्वती का स्वरूप देने का प्रयास।

3. कक्षा –कक्ष को आकर्षक व सुंदर बनाने की अपेक्षाओं को बच्चों को अनुभूत करवाना व उसे क्रियान्वत करवाने का प्रयास करना।

4. क्षेत्र :– सहशैक्षिक क्षेत्र में संबंधित /विद्यालय प्रबन्ध से संबंन्धित।

क्र. सं.	कारण	साक्ष्य
1	विद्यालय में जगह –जगह कचरे कर ढेर	अवलोकन
2	कक्षा –कक्षों का पृष्टाकरण का खराब होना	अवलोकन
3	फूल युक्त पौधों का अभाव	अवलोकन
4	छात्रों द्वारा बचे हुए भोजन को इधर –उधर डाल देना	अवलोकन

5. शोध समस्या के कारण एवं साक्ष्य :–

मैनें रा. उ. मा. वि. तेहनदेसर में पाया कि विद्यालय का बाह्य स्वरूप नीरस था। अवलोकन करने पर यह देखा गया कि विद्यालय में जगह –2 कचरा बिखरा हुआ है। कक्षा – कक्षों में कागज के टूकड़े बिखरे हुए है। कक्षा – कक्षों की दिवारों पर हाथों के निशान, रंग उतरा हुआ था। विद्यालय के बगीचे में फूलों के पेड़– पौधों का अभाव था। शेष पेड़ भी पानी के अभाव में मुरझाऐ हुए थे।

विद्यालय की चार दीवारी व कक्षा – कक्षों में रंग – रोगन की भी कभी थी। इसके अलावा मध्यान्तर में MDM के भोजन के बाद कुछ छात्रों द्वारा जुठे भोजन को हर किसी स्थान पर डाल दिया जाता था।

1. विद्यालय अवलोकन के द्वारा ।

2. विद्यार्थियों व शिक्षकों के साथ बातचित व निरक्षण के आधार पर ।

3. छात्रों व शिक्षकों से बातचित के आधार पर उनमें स्वच्छता कि प्रति उदासिनता का भाव।

4. विद्यालय की पूर्व फोटो व बाद के फोटोग्राफ।

6. कियात्मक परिकल्पनाएंः–

1. शिक्षक व अभिभावकों को कुछ विशेष कार्य आयोजन द्वारा प्रेरित कर विद्यालय परिवेश आकर्षक बनाया जा सकता है।

2. यदि अध्यापक –छात्र को विद्यालय परिवेश सुंदर बनाने की आावश्यकता को महसुस करवा दिया जाए ता निश्चित रूप से प्रेरित होकर सुंदर बनाने का प्रयास करेंगे।

3. छात्रों को इस बात से अवगत करवा दिया जाए की मॉडल स्कूल का कक्षा –कक्ष कैसा होता है।

तो छात्र कक्षा– कक्ष को आकर्षक व सुंदर बनाए रखने का प्रयास करेंगें।

7. कियात्मक परिकल्पना के परीक्षण हेतु कार्य योजनाः–

क्र.सं.	कार्य योजना बिन्दु	उपकरण	अपेक्षित समयावधि
1	समस्या का चिह्नीकरण /पहचान	अवलोकन	1 दिन
2	मॉडल विद्यालय का भ्रमण	विद्यालय अवलोकन	1 दिन
3	कचरापात्रों का रखरखाव	जनसहयोग	1 दिन
4	गमलों का रखरखाव, फूलों के पेड़ पौधे लगवाना	जनसहयोग /छात्र सहयोग	5 दिन
5	विद्यालय में रंग– रोगन करवाना /स्लोगन लिखवाना	भामाशाह व स्टाफ सहयोग	15 दिन
6	MDM के जुठे भोजन का सुनिश्चित स्थान पर एकत्रीकरण	छात्र सहयोग	2 दिन

क्रमशः 1 से 6 में अवलोकन द्वारा स्पष्ट हुआ कि विभिन्न स्थानों पर कचरा, धब्बों, दिवारों पर अयुक्त शब्द लिखे हों, बच्चों की अभ्यास पुस्तिका रखरखाव उचित नहीं हो

उपरोक्तानुसार क्रमशः प्रयास किया गया।

8. शोध निष्कर्ष :–

1. किसी भी विद्यालय का बाह्य स्वरूप उसकी आन्तरिक स्थिती को बयां कर देता है।
2. बच्चों को नियमित रूप से स्वच्छता के प्रति जागरूक करने की जरूरत है।
3. छात्र विद्यालय में आते ही स्वच्छता के प्रति ध्यान देने लेगें।
4. अभिभावकों में भी विद्यालय का परिवर्तित स्वरूप देख कर सहयोग की भावना जागृत हुई है।

5. MDM में मध्यान्तर बाद जुटे भोजन को पिट में डालने की आदत का विकास छात्रों में हुआ है।

6. प्रत्येक कक्षा के छात्रों द्वारा स्वयं के कक्षा– कक्ष को साफ– सुथरा रखने व उनमें कक्ष के कचरे को कचरापात्र में डालने की आदत का विकास हुआ है।

9. शैक्षिक निहितार्थः–

मैंने रा. उ. मा. वि. तेहनदेसर के विद्यालय परिवेश को आकर्षक व सुंदर बनाने के लिए छात्रों, अभिभावकों व शिक्षकों का सहयोग लिया व स्वच्छता के प्रति जागरूकता पैदा की। इस प्रकार से सभी का सहयोग लेकर अन्य राज. विद्यालयों को भी सुंदर व आकर्षक बनाया जा सकता है।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

कियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र 2021–22

अनुसंधानकर्त्ता–

श्रीमती कल्पना दईया

रा.उ.मा.विद्यालय, सातड़ा, चूरू

1. अनुसंधान का शीर्षक– '' बच्चों में खेलकूद केक प्रति रूचि उत्पन्न करने का प्रयास।''

2. शोध समस्या की पृष्ठभूमि, आवश्यकता एवं महत्व – रा.उ.मा.विद्यालय, सातड़ा के कक्षा–8 के छात्रों व छात्राओं के व्यवहारगत आचरण से ये स्पष्ट हुआ कि वे खेलकूद में रूचि कम ले रहे है क्योंकि यह इससे ज्ञात होता है कि अन्य विद्यालयों में होने वाली खेलकूद प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु स्कूल से कोई विद्यार्थी नहीं जाता है। बच्चों को घर पर जाते ही अभिभावक उन्हें घरेलू कार्य में लगा लेते है जिससे उन्हे खेलों में रूचि लेने का अवसर नहीं मिल पाता है इस कारण छात्र जब पढ़ने बैठते है तो इनका ध्यान खेल की तरफ लगा रहता हैं जिससे विधार्थी न तो पढ़ाई में व न ही खेल में पूरी तरह मन लगा कर कार्य कर पाते है। इसके लिए शिक्षकों, अभिभावकों व विधार्थियों सभी को खेलों का महत्व समझाना, शिक्षकों व अभिभावकों की भागीदारी द्वारा विधार्थियों में खेलों के प्रति रूचि उत्पन्न करना आवश्यक है। क्योंकि बच्चों के लिए खेलकूद उनके शारीरिक व मानसिक विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है। खेलकूद विद्यार्थियों के सामाजिक व नैतिक मूल्यों के विकास में सहायक है। खेलकूद से विद्यार्थियों में नेतृत्व, आज्ञापालन के लिए मिलकर काम करना, खेल भावना, साहस, सहनशीलता जैसे आवश्यक सद्गुणों का विकास होता है। उपर्युक्त गुणों से सम्पन्न, स्वस्थ शरीर के बालक ही आगे चलकर देश के योग्य नागरिक बन सकते है।

3. समस्या सीमांकन – अनुसंधान रा.उ.मा.विद्यालय, सातड़ा के कक्षा–8 के छात्र/छात्राओं तक सीमित है।

4. शोध उद्देश्य – अनुसंधान कर्ता द्वारा किया गया शोध सहशैक्षिक गतिविधियों के अन्तर्गत आता है।

5. समस्या के कारण व साक्ष्य –

क्र.स.	समस्या के कारण	साक्ष्य
1.	शिक्षक व अभिभावकों की खेल गतिविधियों के प्रति उदासीना।	छात्रों, शिक्षकों व अभिभावकों के मध्य बातचीत से।
2.	छात्रों की शारीरिक शिक्षा की जागरूकता में कमी।	अवलोकन व साक्षात्कार
3.	विद्यालयों में पर्याप्त सुविधाएं तथा खेलकूद मैदान उपलब्ध	विद्यालय की सुविधाओं का

	ना होना।	अवलोकन
4.	विद्यालय द्वारा खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन न करना।	विद्यालय क कार्यो का अवलोकन
5.	छात्रों को खेलकूद के लिए पर्याप्त समय उपलब्ध न करना	समय सारणी का अवलोकन

6. क्रियात्मक परिकल्पना –

- शिक्षक की खेल गतिविधियों के प्रति उदासीनता को कम करके छात्रों द्वारा खेलकूद में भाग न लेने की समस्या को कम कियाा जा सकता है।
- विद्यार्थियों के शारीरिक शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ा के खेलकूद में भाग न लेने की समस्या को कम किया जा सकता है।
- विद्यालय में खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन करके छात्रों में खेलकूद में भाग न लेने की समस्या को कम किया जा सकता है।
- छात्रों को खेलकूद के लिए पर्याप्त समय उपलब्ध कराके खेलकूद में भाग न लेने की समस्या को कम किया जा सकता है।

7. क्रियात्मक अभिकल्प – प्रथम क्रियात्मक परिकल्पना कि छात्रों को खेलकूद से हमारे स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है तथा यह हमारे स्वास्थ्य के लिए कितना आवश्यक है का परीक्षण करने के लिए तैयार किये गये क्रियात्मक अभिकल्प को निम्न ढ़ंग से लिखा जा सकता है–

क्र.स.	क्रियाएं	विधि	सामग्री	अवधि
1.	खेलकूद हमारे स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है इसकी सूची तैयार करना।	सहयोगियों से विचार विमर्श करके	खेल सामग्री व स्वास्थ्य मापदण्डों को देखकर	1 दिन
2.	क्रियात्मक अनुसंधान हेतु खेलकूद की आवश्यकताओं का चयन करना।	शिक्षा अधिगम क्रियाकलापों की विवेचना करके सहयोगियों से विचार विमर्श करके।	खेल कालांश व मैदान तैयार करना।	6 दिन
3.	आवयकताओं क क्रम का निर्धारण चयनित खेलों का बालकों द्वारा अभ्यास करवाया जायेगा।	खेल क्रियाओं की विवेचना कर बालकों को प्रोत्साहित करना।		6 दिन
4.	परिकल्पना में अभिकल्पित सुझावों का क्रियान्वयन करना।	बालकों को खेल से जोड़कर रूचि के अनुसार खेल खिलवाना।		17 दिन
				30 दिन

8. दत्त संकलन अनुसंधान पूर्व की स्थिति के आधार पर –

खेलकूद	वर्गीकरण पसंद			छात्र / छात्रा
बैडमिन्टन	औसत 4	मध्यम	अधिक	4
खो–खो	औसत	मध्यम 6	अधिक	6
कबड्डी	औसत 5	मध्यम	अधिक	5

9. दत्त संकलन अनुसंधान पश्चात की स्थिति के आधार पर –

खेलकूद	वर्गीकरण पसंद			छात्र / छात्रा
बैडमिन्टन	औसत	मध्यम	अधिक 4	4
खो–खो	औसत	मध्यम	अधिक 6	6
कबड्डी	औसत	मध्यम	अधिक 5	5

10. परिणाम – परिकल्पना में वर्णित सुझावों में खेलकूद के प्रति छात्रों की रूचि उत्पन्न हुई है अतः परिकल्पना को स्वीकार किया जा सकता है।

11. सामान्य निष्कर्ष – क्रियात्मक अनुसंधान के उपरोक्त वर्णित सोपानों के अनुसरण से प्राप्त परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रथम परिकल्पना के रूप में प्रस्तुत सुझावों को लागू करने पर छात्रों में खेलकूद के प्रति जागरूकता तथा रूचि उत्पन्न करना।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

कियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र 2021–22

अनुसंधानकर्त्ता–

श्रीमती भंवरी तेतरवाल, अध्यापक

रा.उ.मा.विद्यालय, गौरीसर, चूरू

अनुसंधान का शीर्षक– '' प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों (कक्षा–5) में हिन्दी भाषा लेखन कौशल में वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के निराकरण का उपाय।''

शोध समस्या की पृष्ठभूमि, आवश्यकता एवं महत्व – भाषा की वर्तनी का अर्थ उस भाषा में शब्दों, वर्णो से अभिव्यक्त करने की किया है। हिन्दी में इसकी आवश्यकता काफी समय तक नहीं समझी जाती थी जबकि अन्य कई भाषाओं, अंग्रेजी व उर्दू में इसका महत्व था। अंग्रेजी व उर्दू में अर्थ शताब्दी पहले भी वर्तनी की रटाई की जाती थी जो आज भी अभ्यास में है। हिन्दी भाषा का पहला और बड़ा गुण ध्वन्यात्मकता है। हिन्दी में उच्चारित ध्वनियों को व्यक्त करना बड़ा सरल है। जैसा बोला जाए वैसा लिखा जाए। यह देवनागरी लिपी की बहुमुखी विशेषता के कारण ही संभव था और आज भी है। परन्तु यह बात शत प्रतिशत अब ठीक नही है। इसके अनेक कारण है। एक ही शब्द की कई वर्तनी मिलती है तो इनको अभिव्यक्त करने के लिए किसी सार्थक शब्द की तलाश हुई। इस कारण मानवीकरण की आवश्यकता महसुस की जाने लगी। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार लगभग 25.79 करोड़ भारतीय हिन्दी भाषा का उपयोग मातृभाषा के रूप में करते है। हिन्दी में हम जैसा बोलते है वैसा लिखते है तो बहुत सारी गलतियां कर बैठते है। जैसा की सुनने में ग–ए सही लगता है ग–ये नही। इस विधि से शब्द की उत्पति छिप जाती है।

हिन्दी में उच्चारण के दोष प्रमुख है ऋ का उच्चारण 'रि' की भांति करना। अतः को अतह की भांति बोलना। ज्ञ का ग्य उच्चारित करना। 'श' और 'ष' में भेद नही कर पाना। अशुद्ध वर्तनी के कारण भाषा का स्वरूप तो विकृत होता ही है कभी–कभी अर्थ का अनर्थ भी हो जाता है। इसके अक्षरों का चयन कंठ व मुख से निकलने वाली ध्वनियों के आधार पर किया गया। गलत प्रयोग इतने प्रचलित हैं कि इन्हे बदलना असंभव सा हो गया है।

साहित्य में व्याकरण के नियम जरूरी हैं। शुद्ध उच्चारण के अभाव में मौखिक भाषा अस्वाभाविक व प्रभावहीन हो जाती है। वर्तनी के अन्तर्गत शब्द ध्वनियों को जिस क्रम से जिस रूप से उच्चारित किया जाता है, उसी क्रम से उसी रूप में लिखा भी जाता है। अतः शुद्ध वर्तनी के लिए शुद्ध उच्चारण आवश्यक है। इसके निराकरण का सबसे सरल उपाय निरन्तर अभ्यास करना है। शुद्ध हिन्दी

लेखन के लिए छात्रों को बोलकर लिखने का अभ्यास हिन्दी पुस्तकों का अधिकाधिक उपयोग करना। वर्तनी की गलतियों के लिए उन शब्दों को बार–बार लिखकर अभ्यास करना। अशुद्ध शब्दों की शुद्ध रूप के साथ सूचि बनाकर अभ्यास करना। उक्त अध्ययन के लिए कक्षा–5 के विद्यार्थियों को जो हिन्दी भाषा शिक्षण में सामान्य बोलचाल की भाषा में बोले जाने वाले वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के शुद्ध उच्चारण का विश्लेषण किया गया है।

समस्या उत्पत्ति – रा.उ.मा.विद्यालय, गौरीसर के प्राथमिक कक्षा–5 के विद्यार्थियों को मेरे द्वारा हिन्दी पाठ्यपुस्तक के पैराग्राफ का अध्ययन करवाया गया उस समय मुझे बच्चों के द्वारा वाचन करने व शुद्ध लेखन में अशुद्ध वाचन की स्थिति देखने को मिली। बच्चें अभ्यास पुस्तिका में सही उत्तर जानते हुए भी लेखन में अशुद्धियॉ कर रहे थे। इससे यह स्पष्ट है बच्चे जैसा बोलते है वैसे लिखते नहीं। अथवा उनके सुनने की क्षमता में कोई कमी हो जिसके कारण अशुद्ध लिखते है। क्योंकि भाषा के विकास में सबसे पहले सुनना तत्पश्चात बोलना इस क्रम में कहीं न कहीं त्रुटि रहती है तो अशुद्ध वाचन अशुद्ध लेखन करता है। यहॉ यह तो स्पष्ट है बच्चे अशुद्ध लेखन व वाचन वर्तनी संबंधी अशुद्धियां करते है। जब तक इनके कारणों की जानकारी नहीं होगी तब तक निराकरण संभव नहीं है। अर्थात निदान के पश्चात की उपचार संभव है। इसके कारण मैंने यह अनुभव किया क्यों न कोई ऐसा क्रियात्मक कार्य किया जाए जिससे बच्चों की वर्तनी संबंधी अशुद्धियां हो जाए। इसी से प्रेरित होकर मैंने हिन्दी भाषा लेखन कौशल वर्तनी संबंधी अशुद्धि निराकरण का प्रयास किया है। इस अन्वेषण के माध्यम से किया है।

अनुसंधान के उद्देश्य –

i. छात्रों मे वर्तनी संबंधी कारण की जानकारी करना।
ii. विद्याथियों में वर्तनी संबंधी अशुद्धियों को दूर करने का प्रयास करना।

समस्या का क्षेत्र –शैक्षिक।

समस्या सीमांकन – रा.उ.मा. विद्यालय के कक्षा–5 के 18 छात्र 30 छात्राएं पर किया गया।

परिकल्पना –

(1) भाषा शिक्षण में छात्रों द्वार की जाने वाली वर्तनी संबंधी अशुद्धियों को दूर करना।

(2) शुद्ध लेखन शुद्ध वाचन के कौशल का विकास करना।

(3) भाषा शिक्षण ज्ञान को बढ़ावा देना।

समस्या के कारण –

क्र.स.	समस्या	कारणों का विश्लेषण	साक्ष्य प्राप्ति स्त्रोत
1.	वर्तनी उच्चारण संबंधी	1. छात्रों द्वारा कक्षा में पुस्तक वाचन के समय निम्न शब्दों का अशुद्ध वाचन करना जैसे– अक्षर को अच्छर, हिंसा–हिन्सा, विद्यालय–विधालय, शाप–सारप, मुक्ति– मुकती आदि।	पाठयपुस्तक के माध्यम द्वारा अवलोकन द्वारा
		2. (समूह में चर्चा के माध्यम से) बच्चों से कक्षा में वाद–विवाद प्रतियोगिता मेरे द्वारा करवायी गयी। मैने देखा कुछ बच्चे स्थानीय	अवलोकन के माध्यम द्वारा वार्तालाप

		भाषा का इस्तेमाल कर रहे थे। 'तू बोल' तेरो नाम के है जैसे वाक्यों का इस्तेमाल कर रहे थे।	
2.	अशुद्ध लेखन संबंधी	1. बच्चों से कक्षा में मेरे द्वारा (हंस और कौए की दोस्ती) पैराग्रफ बोलकर लिखवाया गया। जब उनके द्वारा लिखे पैराग्राफ को जॉच किया तो मैनें पाया अधिकांश बच्चों में एक जैसी अशुद्धियां देखने को मिली। जैसे– गीरा, मुसाफीर, सवभाव, दोसती, दुस्ट, करोध, सजन, सुरय, कोवे, पख आदि। 2. अभ्यास पुस्तिका जॉच के दौरान संयुक्त अक्षरों की अशुद्धि देखने को मिली। जैसे– सरग, करम, धरम।	पैराग्राफ जॉच द्वारा अभ्यास पुस्तिका जॉच गृहकार्य जॉच

कियात्मक अनुसंधान हेतु समस्याओं के कारण एवं उनके साक्ष्य –

क्र.स.	समस्या	कारण	साक्ष्य
1.	वर्तनी संबंधी	1. लिखित कार्य में लापरवाही करना 2. विषयाध्यापकों द्वारा कार्य उत्तर पुस्तिका बारीकी से नहीं जॉचना। 3 शब्दों की पहचान निम्न कोटी की होना।	गृहकार्य उत्तर पुस्तिका उच्चारण अवयव नहीं पहचानना।
2.	अशुद्ध लेखन संबंधी	1. श्रुतिलेख की परम्पराओं का मेरे द्वारा महत्व नहीं दिया गया। 2. अशुद्ध शब्दों को बार–बार लिखकर अभ्यास नहीं करवाना। 3. समूह मे शिक्षकों द्वारा अशुद्ध शब्दों का इस्तेमाल करना। 4. कक्षा–कक्ष में आपसी बातचीत के दौरान स्थानीय भाषा का बोलबाला होना।	सहपाठी शिक्षकों की वार्तालाप का अवलोकन।

कियात्मक परिकल्पना का परीक्षण हेतु कार्य योजना– कक्षा 5 के 48 छात्र/छात्राओं पर शोध कार्य किया गया।

क्र.स.	कियाएं	विधि	सामग्री	अवधि
1.	1. कियात्मक अनुसंधान में वर्तनी संबंधी अशुद्धियों को दूर करना।	1. शुद्ध वर्तनी के शब्दों के अशुद्ध एवं शुद्ध रूप बताया। 2. उच्चारण संबंधी प्रतियोगिताएं करवान।	शुद्ध अशुद्ध शब्दों की सूची बनाकर कक्षा में चिपकाना। फलैश कार्ड, चार्ट, चित्रपट	6

		3. कठिन शब्द श्यामपट्ट पर लिखकर उनका उच्चारण करवाना।	श्यामपट्ट, पुस्तक	6
2.	2.उच्चारण अशुद्धता को दूर करने के लिए निरन्तर अभ्यास करवाना।	1. पैराग्राफ अध्ययन। 2. शुद्ध लेखन अभ्यास	पाठ्यपुस्तक अभ्यास पुस्तिका	6
3	3.बोलकर लिखने का अभ्यास करवाना	1. आदर्श वाचन, अनुकरण वाचन पर बल देना।	लिंग्वाफोन	6

दत्त संकलन – तालिका सं. – 1

अनुसंधान से पूर्व की स्थिति के आधार पर–

वर्गीकरण	अशुद्ध वाचन शब्द	वर्तनी लेखन
26–30	18	20
21–25	15	16
16–20	5	4
11–15	3	5
06–10	5	2
01–05	2	1

तालिका सं. – 2

अनुसंधान के पश्चात की स्थिति के आधार पर–

वर्गीकरण	अशुद्ध वाचन शब्द	वर्तनी लेखन
26–30	18	1
21–25	12	3
16–20	4	4
11–15	0	8
06–10	14	15
01–05	12	17

1. कक्षा 5 के छात्र/छात्राओं के वर्तनी गलतियों को बार–बार लिखकर अभ्यास करवाया गया।
2. बोलकर लिखने का अभ्यास करवाया गया।
3. अभ्यास पुस्तिका द्वारा प्रतिदिन अनुसंधान के कौशल उपचारात्मक जॉच सुधार द्वारा आकलन किया गया।
4. जॉच करने के बाद अशुद्ध शब्दों को पुनः लिखने का अभ्यास करवाया गया।
5. कक्षा–कक्ष में आपसी वार्तालाप में हिन्दी भाषा का अधिक से अधिक उपयोग किया गया।

अनुसंधान से पूर्व और पश्चात की स्थिति के आधार पर विश्लेषण –

1. अनुसंधान से पूर्व जो छात्र/छात्राएं वर्तनी अशुद्ध वाचन कर रहे थे अनुसंधान के पश्चात उनमें नहीं के बराबर हो गई।
2. अनुसंधान से पूर्व जो छात्र/छात्राएं आपसी वार्तालाप में स्थानीय भाषा का प्रयोग कर रहे थे। अनुसंधान के पश्चात हिन्दी भाषा में बातचीत करने लगे।
3. अनुसंधान से पूर्व जो छात्र/छात्राएं पैराग्राफ लेखन, गृहकार्य में वर्तनी संबंधी अशुद्धियां कर रहे थे। बाद में उनकी संख्या बहुत न्यून हो गई।
4. छात्र/छात्राओं में शब्दों की पहचान उच्च कोटी की हो गई।
5. छात्र/छात्राओं में हिन्दी पाठ्यपुस्तक के प्रति अध्ययन की प्रक्रिया रूचिकर होने लगी।

विद्यार्थियों में लेखन क्षमता का माध्य पूर्व व पश्च 22.07 व 10.84 है। माध्य अन्तर 11.35 है। पूर्व माध्य पश्च से अधिक है जो कि स्पष्ट करता है कार्य योजना प्रभावी है। मानक विचलन 2.20 है जो कि तालिका में स्थिति 99 प्रतिशत पर मान 2.54 से अधिक है। अतः हम कह सकते है कि लेखन क्षमता पर कार्य योजना विद्यार्थियों पर 99 प्रतिशत प्रभावी है।

निर्णय – तालिका 3 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि प्राप्त दत्तों के विश्लेषण में पूर्व माध्य पश्च से अधिक व कान्तिकमान वाचन के 2.41 व 3.10 तालिका के मान 95 प्रतिशत व 99 प्रतिशत से अधिक है। अतः हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि कार्य योजना 95 प्रतिशत व 99 प्रतिशत पर वाचन व लेखन पर प्रभावी है। अतः स्वीकृत की जाती है।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

कियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र 2021–22

अनुसंधानकर्त्ता–

श्री हंसराज आसेरी, व.अध्यापक

रा.उ.मा.विद्यालय, झाड़सर कांधलान, तारानगर

अनुसंधान का शीर्षक– '' छात्रों में अनुशासनहीनता की प्रवृति में सुधार लाने का अध्ययन करना।''

शोध समस्या की पृष्ठभूमि, आवश्यकता एवं महत्व – अनुशासन के बिना कोई सुखी जीवन नही जी सकता। अनुशासन वह सब कुछ है जो हम सही समय से सही तरीके से करते है जीवन के सभी कार्यो में अनुशासन अत्यधिक मूल्यवान है हमें हर समय इसका पालन करना है चाहे वह विद्यालय हो, घर हो, कार्यालय, संस्था, कारखाना, खेल का मैदान हो या युद्ध का मैदान।

अनुशासन दो शब्दों से मिलकर बना है अनु और शासन। अनु का अर्थ पालन और शासन का अर्थ नियम अर्थात नियमों का पालन करना। छात्र जीवन में अनुशासन का बड़ा महत्व होता है छात्र राष्ट्र का भविष्य होते है इसलिए उन्हे उचित अनुशासित होना चाहिए। संसार का प्रत्येक महान व्यक्ति अनुशासित रहा है।

शोध समस्या की सीमांकन – राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, झाड़सर काधलान के कुछ छात्र अनुशासनहीनता के शिकार है जैसे विद्यालय समय से देरी से आना, कुछ कालांश विशेष में कक्षा–कक्ष से नदारद रहना आदि उक्त कुछ छात्रों की इस अनुशासनहीनता की प्रवृति में सुधार करना है।

शोध के उद्देश्य –

1. छात्रों को अनुशासित जीवन जीने के महत्व बताना।
2. छात्रों को अनुशासन के प्रति जागृत करना।
3. छात्रों को एक अच्छे नागरिक बनने की सकारात्मक सोच उत्पन्न करना।

क्षेत्र – राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, झाड़सर काधलान में विद्यार्थियों को अनुशासन के महत्व को बताना तथा उनका प्रशासनिक स्तर पर मूल्यांकन करना।

शोध के उपकरण – सफल व्यक्ति जीवन चरित्र की कहानियों के उदाहरण प्रस्तुत करना।

समस्या के कारण – राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, झाड़सर काधलान के कुछ विद्यार्थी विद्यालय समय से देरी से आते है अवलोकन करने पर पता लगा कि अधिकांश अभिभावक कृषि पर निर्भर है एवं इस समय कटाई–कढ़ाई का काम चल रहा है जिसके कारण अपने बच्चों को विद्यालय समय पर भेजने का ध्यान नही रख पाये, एवं कुछ अभिभावक कृषि कार्य की अधिकता के कारण अपने बड़े बच्चों को कृषि कार्य में हाथ बटाने के लिए कहते है सही कारण कुछ विद्यार्थी विद्यालय आकर कुछ कालांश विशेष छोड़कर खेतों में चले जाते थे। विद्यालय से घर जाते समय कुछ विद्यार्थी एक दूसरे से झगड़ा करते है इसका सबसे बड़ा कारण ग्रामीण परिवेश ही है। उपरोक्त कारणों के निराकरण हेतु विद्यालय स्टाफ

साथियों से विचार विमर्श कर अभिभावकों की बैठकों का आयोजन किया जिसमें अभिभावकों ने विद्यार्थियों को विद्यालय समय पर भेजने का आश्वासन दिया साथ ही विद्यालय समय पर कृषि कार्य न करवाने का भी आश्वासन दिया परिणामतः विद्यार्थी समय पर शाला पहुचने लगे है। एवं कक्षा–कक्ष में भी रूचिपूर्वक अध्ययन करने लगे है।

शोध समस्या के कारण व साक्ष्य –

क्र.स.	कारण	साक्ष्य
1.	कुछ विद्यार्थी विद्यालय समय से देरी से आना।	कक्षा–कक्ष में अवलोकन
2.	कुछ विद्यार्थी कालांश विशेष में कक्षा–कक्ष से नदारद रहना।	शिक्षक का अनुभव
3.	विद्यालय से घर जाते समय कुछ विद्यार्थी एक दूसरे से झगड़ा करना।	अवलोकन

क्रियात्मक परिकल्पनाएं –

1. छात्रों को विद्यालय समय पर आने के लिए प्रेरित किया जाना।
2. छात्रों को सभी कालांशों में कक्षा–कक्ष में रहने के लिए प्रेरित किया जायेगा।
3. छात्रों को अनुशासित होने के लिए प्रेरित किया जायेगा।
4. छात्रों को अनुशासन से भविष्य में होने वाले लाभ के प्रति जागरूक करना।

क्रियात्मक परिकल्पना के परीक्षण हेतु कार्य योजना –

क्र.स.	कार्ययोजना	कार्य जो करना है	विधि	समयावधि
1.	अनुशासनहीन छात्रों की सूची तैयार करना	1. विद्यालय समय से देरी से आने वाले विद्यार्थियों की सूची। 2. कक्षा–कक्ष से विभिन्न कालांशो से नदारद रहने वाले विद्यार्थी	सहयोगियों से विचार–विमर्श	2 दिन

2.	अनुशासित छात्रों को पुरस्कृत करना	सफल व्यक्तित्व जीवन चरित्र की कहानियों के उदाहरण प्रस्तुत करना।	सहयोगियों से विचार–विमर्श द्वारा	2 दिन
3.	शिक्षकों द्वारा अभिभावकों व महत्व बताने के लिए प्रेरित करना।	विद्यार्थियों को अनुशासन का तथा उन्हें अनुशासन हेतु	बैठकों का आयोजन करना।	4 दिन

दत्त संकलन अनुसंधान पूर्व की स्थिति के अनुसार –

क्र.स.	वर्गीकरण	छात्र	कक्षा
1.	विद्यालय समय से देरी से आने वाले विद्यार्थी	40	1–12
2.	कालांश विशेष में कक्षा–कक्ष से नदारद रहने वाले छात्र	07	9–12

दत्त संकलन अनुसंधान पश्चात की स्थिति के अनुसार –

क्र.स.	वर्गीकरण	छात्र	कक्षा
1.	विद्यालय समय से देरी से आने वाले विद्यार्थी	06	1–5
2.	कालांश विशेष में कक्षा–कक्ष से नदारद रहने वाले छात्र	02	11–12

दत्त संकलन का विश्लेषण –

1. अनुशासनहीनता की प्रकृति में लिप्त छात्र नियमित विद्यालय आने लग गए।
2. अनुशासित छात्रों को पुरस्कृत होते देख अनियमित छात्र नियमित हुए।
3. अनुशासनहीन छात्र रूचि के साथ सभी कालांश कक्षा–कक्ष में रहते है।

निष्कर्ष – परिकल्पना में वर्णित उपायों से अनुशासनहीनता की प्रवृति में कमी आई है अतः परिकल्पना को स्वीकार किया जा सकता है एवं परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट है कि परिकल्पना के रूप में प्रयुक्त सुझावों को लागू करने पर छात्रों द्वारा की जाने वाली क्रियाएं प्रभावित हुई है तथा मनोवैज्ञानिक तरीके, प्रेम व स्नेह द्वारा इसमें सकारात्मक सुधार किया जा सकता है।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

कियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र 2021–22

अनुसंधानकर्त्ता–

श्री जयचन्द राबिया, अध्यापक

रा.उ.प्रा.विद्यालय, राऊताल

शोध शीर्षक– '' बच्चों के गृहकार्य न करने की समस्या समाधान।''

अनुसंधान का शीर्षक – विद्यार्थियों के गृहकार्य न करने की समस्या रा.उ.प्रा.विद्यालय, राऊताल चूरू के कक्षा–8 के (विद्यार्थियों द्वारा गृहकार्य समय पर न करने के कारण व निराकरण करने का एक प्रयास। जिसमें कक्षा–8 के 10 छात्रों में से 6 छात्रों द्वारा गृहकार्य न करने के लिए।

शोधकर्ता के उद्देश्य –

1. विद्यार्थियों को गृहकार्य करने के लिए प्रेरित करना।
2. विद्यार्थियों को गृहकार्य नियमित रूप से करने के लाभ समझाना।
3. गृहकार्य को समय पर करने से होने वाले महत्व को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बताना।

गृहकार्य समय पर न करने के कारण –

1. गृहकार्य रूचिपूर्ण न होना – बच्चों को दिया जाना वाला गृहकार्य रूचि के अनुरूप न होने के कारण बच्चे समय पर नही करते हैं
2. समझ का अभाव – बच्चों को गृहकार्य के महत्व का ज्ञान न होने के कारण बच्चे समय पर नही करते है।
3. गृहकार्य की अधिकता – बच्चों को सभी विषयों का गृहकार्य होने के कारण बच्चों में गृहकार्य के प्रति बोझ बढ जाता है, जिसके कारण बच्चे विषयों का गृहकार्य समय पर नही कर पाते है।
4. अभिभावकों का असहयोग – सभी अभिभावकों द्वारा बच्चों पर ध्यान नही दिया जाता है जो अभिभवक बच्चों पर ध्यान व सहयोग प्रदान नही करते है उनके बच्चे गृहकार्य को समय पर नही कर पाते है। इस कारण वे गृहकार्य मे पिछड़ जाते है।

5. विद्यालय नियमित आने का अभाव – जो बच्चे नियमित विद्यालय नही आते है उनका गृहकार्य इकट्ठा हो जाता है तब उनके द्वारा सम्पूर्ण कार्य समय पर नही होने के कारण वे गृहकार्य करने में पिछड़ जाते है।
6. अन्य कारण – बच्चों द्वारा गृहकार्य समय पर न करने के अन्य कारण हो सकता है। विद्यार्थी के पूर्ण रूप से स्वस्थ न होने के कारण भी बच्चे गृहकार्य को समय पर नही कर पाते है।

समस्या की पृष्ठभूमि – जब मैने कक्षा–8 में गृहकार्य पुस्तिका का निरीक्षण किया तो कुछ बच्चों द्वारा गृहकार्य पूर्ण किया हुआ नही मिला तो गृहकार्य पूर्ण करवाने के विषय पर विचार किया तथा मैने आत्मचिंतन किया कि बच्चों को गृहकार्य समय पर पूर्ण करवाने हेतु प्रेरित किया जाए तथा उन्हे गृहकार्य के महत्व के बारे में बताया कि गृहकार्य समय पर पूर्ण करने से छात्र को किये हुए कार्य को याद करने में मदद मिलती है तथा लेखन कार्य में सुधार होगा। लेखन कार्य में आयी हुई अशुद्धियों को शिक्षक द्वारा गृहकार्य जांच करते समय दूर किया जाता है। जिससे वर्णो/शब्दों को शुद्ध लिखने की आदत विकसित होती है। जिससे वर्णो /शब्दों को शुद्ध लिखने की आदत विकसित होती है। गृहकार्य नियमित करने से गृहकार्य याद हो जाता है जिसके द्वारा परीक्षा के समय पेपर आसानी से हल करने में मदद मिल सकती है। उन्हे परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने में मदद मिलती है।

समस्या सीमांकन – यह अनुसंधान रा.उ.प्रा.विद्यालय, राऊताल की कक्षा–8 के छात्रों तक सीमित है।

शोध उद्देश्य – गृहकार्य के प्रति बच्चों मे रूचि उत्पन्न करना। गृहकार्य के महत्व को बताना।

क्षेत्र – अनुसंधान कार्य द्वारा किया शोध शैक्षणिक विषय के अन्तर्गत आता है।

शोध समस्या के कारण व साक्ष्य –

क्र.स.	कारण	साक्ष्य
1.	कुछ बच्चे गृहकार्य पूर्ण नही कर रहे थे	कार्य पुस्तिका

बच्चों द्वारा गृहकार्य समय पर करवाने के लिए अपनाए जाने वाले उपाय –

1. बच्चों को गृहकार्य का महत्व बतानाः– सबसे पहले शिक्षक द्वारा गृहकार्य के महत्व के बारे में बताना और उनको बताना कि गृहकार्य समय पर करने से गृहकार्य याद हो जाता है जिसके कारण परीक्षा पत्र हल करने में आसानी होती हैं
2. गृहकार्य के प्रति बच्चों में रूचि उत्पन्न करनाः– बच्चों में गृहकार्य के प्रति रूचि उत्पन्न कर बच्चों को गृहकार्य करने के लिए प्रेरित करना जिससे बच्चे समय पर करने लग जायेंगे।
3. बच्चों को नियमित विद्यालय आने के लिए प्रेरित करनाः– बच्चों को नियमित विद्यालय आने के लिए प्रेरित किया तथा बताया कि समय पर आने से रोजाना का गृहकार्य समय पर होता है जिससे गृहकार्य समय पर पूरा कर सकते है।
4. अभिभावकों को बच्चों के गृहकार्य में सहयोग के लिए प्रेरित करनाः– अभिभावक बच्चों को गृहकार्य में सहयोग करे और उन्हे गृहकार्य करने के लिए प्रेरित करना चाहिए जिससे बच्चे गृहकार्य समय पर करने लगे।
5. गृहकार्य को रूचिकर बनानाः– शिक्षकों द्वारा गृहकार्य को रूचिकर बनाना चाहिए जिससे बच्चे में गृहकार्य के प्रति रूचि जागृत होगी जिससे बच्चे गृहकार्य को समय पर कर सके।
6. गृहकार्य पूरा करने वाले छात्रों को पुरस्कार देनाः– जो बच्चे समय पर गृहकार्य पूरा करते है उन बच्चों को पुरस्कृत करने से बच्चे गृहकार्य को समय पर करने के लिए प्रेरित होगे और अन्य विद्यार्थी उनको देखकर गृहकार्य समय पर पूरा करने के लिए प्रेरित होगे।

क्रियात्मक परिकल्पनाएं –

1. जो बच्चे गृहकार्य समय पर पूरा करके नही लाते है उन्हे प्रेरित करके समय पर गृहकार्य करने के लिए प्रेरित करना।
2. विद्यालय में आ रही समस्याओं का उचित मार्गदर्शन करना।
3. अभिभावकों को बच्चों द्वारा गृहकार्य करवाने के लिए प्रेरित करना।

क्रियात्मक परिकल्पना के परीक्षण हेतु कार्य योजना –

क्र.स.	कार्य योजना बिंदु	कार्य जो करना है	साधन	समयावधि
1.	पूर्व परीक्षा/वर्तमान स्थिति का आकलन	कक्षा–कक्ष में दिए गये गृहकार्य का अवलोकन	कॉपियां	06 दिन
2.	क्रिया पक्ष का क्रियान्वयन शिक्षण योजना शिक्षण सहायक सामग्री	गतिविधि प्रदर्शन विधि द्वारा	सूचि व सारणी	04 दिन
3.	स्वयं आदर्श बनकर बच्चों में गृहकार्य करने की आदत का विकास किया गया	व्याख्यान व उदाहरण विधि द्वारा	पेपर, पेंसिल	01 दिन
4.	पश्च परीक्षण/परिवर्तन आंकलन	बच्चों के गृहकार्य में सुधार हुआ	कॉपिया	02 दिन
5.	दत्त विश्लेषण व सांख्यिकी	बच्चों का मूल्यांकन किया	कॉपिया	02 दिन

अनुसंधान पूर्व की स्थिति के आधार पर–

वर्गीकरण	अंकानुसार	छात्रा	योग
मेधावी	7–10	01	01
औसत	4–6	02	02
कमजोर	1–3	03	03

अनुसंधान पश्चात की स्थिति के आधार पर–

वर्गीकरण	अंकानुसार	छात्रा	योग
मेधावी	7–10	04	04
औसत	4–6	01	01
कमजोर	1–3	01	01

निष्कर्ष – बच्चों को गृहकार्य के लिए प्रेरित करने व गृहकार्य का महत्व बताने के कारण बच्चों में काफी सुधार आया। बच्चे अब गृहकार्य में रूचि लगे तथा गृहकार्य को समय पर करने लगे।

जिला शिक्षा व प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान

सत्र –2021 –2022

शोधकर्ताः– श्रीमती कुसुम रानी, अध्यापक, रा.मा.विद्यालय, खुडेरा बड़ा, रतनगढ़

शोधशीर्षक :–

" रा.मा.विद्यालय, खुडेरा बड़ा, रतनगढ़ रा.उ.प्रा.वि.मघाऊ के कक्षा – 9 के छात्रों में सामान्य ज्ञान संबंधी जानकारी की कमी के कारणों का अध्ययन एवं निराकरण के प्रयास "

भूमिका :– वर्तमान के इस वैज्ञानिक, अत्याधुनिक एवं भौतिकवादी युग में विद्यालय से शिक्षा प्राप्त कर निकलने वाले विधार्थी को करियर निर्धारण की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। किसी भी विद्यार्थी के करीयर निर्माण की एक आवश्यक आधारशिला है। उसमें निहित सामान्य ज्ञान एवं बुद्धिमता स्तर का श्रेष्ठ स्तर पर होना GK तथा IQ को हम पाठयक्रम के साथ अभ्यास करवायें तो निश्चित रूप से यह छात्रों के भविष्य निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

आवश्यकता एवं औचित्यः–

प्रायः यह पाया गया है कि विद्यार्थी अपन पाठ्यक्रम का गहनता से अध्ययन करते है। परन्तु दैनिक जीवन में सामान्य ज्ञान या बुद्धिमता स्तर से सम्बन्धित ज्ञान की उपेक्षा करते है। इससे पाठ्यक्रम के ज्ञान को वे सामान्य ज्ञान से जोड़ नहीं पाते और पाठ्यक्रम का ज्ञान केवल किताबी ज्ञान तथा परीक्षा को उतीर्ण करने के उद्देश्य से ग्रहण की गई विषय वस्तु तक सीमित रह जाता है।

परिभाषिक शब्दावली का सीमित अर्थः–

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त सामान्य GK का तात्पर्य ऐसे सामान्य ज्ञान से है जो कक्षा 8 के स्तर हेतु हो तथा समसामयिक घटनाएं भी जिसमें सम्मिलित हो ऐसे ज्ञान का संग्रह करवाना तथा कक्षा 8 के स्तर की बुद्धिमता सम्बन्धी सक्रियाए इस शोध में चुनी गई।

शोध की समस्या एवं साक्ष्यः–

क्र.सं	समस्या	साक्ष्य
1	छात्रों में सामान्य ज्ञान का स्तर न्यून है	छात्रों से quiz जैसी गतिविधि में तथा अन्य अवसरों पर पूछे गए 80 प्रतिशत प्रश्न अनुतरित पाए गए
2	छात्रों में बुद्धिमता स्तर न्यून है	छात्रों को IQ से सम्बन्धित गतिविधि करवायी गई एवं 20 प्रतिशत से न्यून परिणाम पाया गया
3	छात्र सामान्य ज्ञान एवं IQ के लिए कोई विशेष प्रयास नहीं करते	लगभग 90 प्रतिशत से अधिक छात्रों ने यह स्वीकारा की वे अखबारों या पत्र –पत्रिकाओं को नहीं पढते है। साथ ही TV पर ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों या सामाचार चैनलों को देखने वाले विधार्धियों का प्रतिशत 5 प्रतिशत से कम पाया गया

उद्देश्य :–

1. छात्रों में सामान्य ज्ञान एवं बुद्धिमता स्तर को बढाने का प्रयास करना ।
2. छात्रों के पाठ्यक्रम के ज्ञान को सामान्य ज्ञान से जोड़ना
3. छात्रों को कैरियर निर्माण में सामान्य ज्ञान एवं IQ के महत्व से परिचित करते हुए उन्हें सहयोग प्रदान
   करना।
4. छात्रों को अखबार एवं विविध पत्र –पत्रिकाएं नियमित रूप से पढवाने का प्रयास करवाना ।

परिकल्पनाएंः–

1 छात्रों को सामान्य ज्ञान एवं IQ की उचित जानकारी देने से वे आधुनिक युग में अपने भविष्य के प्रति एवं भावी कैरियर के प्रति संवेदनशील हो सकेंगे।
2. छात्र GK एवं IQ के अध्ययन से अपने पाठ्यक्रम को भी सरल, बोधगम्य तथा अधिगम योग्य बना सकेंगे।
3. छात्रों में अखबार एवं विविध पत्र – पत्रिकाओं के नियमित अध्ययन से उनमें न केवल सामान्य ज्ञान सकी अभिवृद्धि होगी अपितु उनमें भाषा संबन्धी दक्षता का भी विकास होगा।

परिसीमन एवं न्यादर्शः–

रा.मा.विद्यालय, खुडेरा बड़ा, रतनगढ़ के कक्षा 9 के 30 छात्र।

उपकरण :–

साक्ष्य, अभिलेख, संधारण, मूल्यांकन आदि।

विधिः–

क्रियात्मक प्रायोजन विधि।

क्रियान्विति के चरण एवं कार्य योजना

क्र.सं.	माह का नाम	क्रियान्विति के चरण	अवधि	मूल्यांकन
1	सितम्बर 2021	1. पूर्व स्थिति का आकलन 2. आकल्प निर्माण 3. पूर्व जांच का आयोजन	10 दिन 3 दिन 1 दिन	प्रश्नावली द्वारा सांख्यिकी द्वारा
2	अक्टूबर 2021	1. छात्रों का सप्ताह में 2 दिन विविध क्षेत्रों से संबधित सामान्य ज्ञान के प्रश्न उतर लिखवाना 2. छात्रों से GK, IQ की एक पृथक कॉपी बनवाना एवं उनमें साप्ताहिक जानकारियों के अलावा अखबार की कटिंग्स लगवाना 3 . छात्रों को रोज अखबार एवं पाक्षिक या मासिक किसी बाल पत्रिका जो भी उपलब्ध हो, पढने हेतु देना	2 दिन प्रति सप्ताह संपूर्ण माह संपूर्ण माह	इकाई परख अवलोकन द्वारा अवलोकन द्वारा
3	नवम्बर 2021	1. बाल दिवस पर एक quiz का आयोजन करना जिसमें न्यादर्शकों छात्रों की टीम विद्यालय के अन्य छात्रों की टीम के साथ भाग ले 2. छात्रों की GK and IQ की कॉपी में सामान्य ज्ञान IQ अभ्यास, अखबार की कटिंग लगवाना जारी रखना एवं पत्र – पत्रिकाओं के अध्ययन की प्रवृति जारी रखना	1 दिन संपूर्ण माह	सांख्यिकी द्वारा इकाई परख द्वारा
4	दिसम्बर 2021	1. छात्रों को समसामयिक घटनाओं से संबंधित सामान्य ज्ञान कैसे एवं कहॉ से संग्रहित किया जा सकता है का अभ्यास करवाना।	संपूर्ण माह	ईकाई परख द्वारा

		2. अखबार एक विश्व ज्ञान कोष होता है। इस विषय पर भिति पत्रिका का निर्माण करवान। 3. छात्रों द्वारा किए गए कार्यो का अन्य विद्यार्थियों के समक्ष प्रदर्शन करना एवं श्रेष्ठ विद्यार्थियों को पुरस्कृत करना।		
5	जनवरी 2022	1. विद्यालय स्तर पर सामान्य ज्ञान लिखित प्रतियोगिता का आयोजन करना जिसका पूर्णाक 100 हो तथा जिसमें 100 प्रश्न बहुविकल्पनात्मक हो जो अब तक छात्रों को लिखवाये गए ज्ञान पर आधारित तथा विविध समसामयिक घटनाओं पर आधारित होगे। 2. कैरियर डे पर क्विज का आयोजन करना जिससे न्यादर्श के छात्रों को विविध टीमों ने स्थान दिया गया। 3. विविध प्रतियोगिताओं में श्रेष्ठ स्थान पाने वाले विद्यार्थियों को गणतंत्र दिवस समारोह में पुरस्कृत करना।	1 दिन 1 दिन 1 दिन	सांख्यिकी द्वारा सांख्यिकी द्वारा सांख्यिकी द्वारा
6	जनवरी 2022	1. प्राप्त सांख्यिकी का विश्लेषण करना एवं प्रतिवेदन लेखन। 2. शोध की उपादेयता एवं निष्कर्ष प्राप्त करना। 3. पश्चात स्थिति का आंकलन करना।	3 दिन	सांख्यिकी द्वारा

दत्त संकलन – सारणीः–1 पूर्व एवं पश्च जॉच की स्थिति का आकलन।

क्र.स.	स्तर पूर्णाक 10	पूर्व जांच	पश्च जांच
1.	उत्कृष्ठ 8–10	0	17
2.	बहुत अच्छा 6–8	2	7
3.	अच्छा/औसत 4–6	15	3
4.	कमजोर 0–4	13	3
	योग	30	30

सारणीः–2 इकाई परख का आकलन स्तरानुसार

क्र.स.	स्तर पूर्णाक 10	I.	II.	III.	IV.	V.
1.	उत्कृष्ठ 8–10	0	5	9	12	18
2.	बहुत अच्छा 6–8	5	12	12	8	8
3.	अच्छा/औसत 4–6	17	8	6	8	2
4.	कमजोर 0–4	8	10	3	2	2
	योग	30	30	30	30	30

सारणीः–3 क्विज प्रतियोगिता एवं सामान्य ज्ञान संकलन का आकलन

क्र.स.	क्विज प्रतियोगिता			श्रेष्ठ स्थान प्राप्त
	अवसर	भाग लेने वाल छात्र	न्यादर्श के छात्र	
1.	बाल दिवस	25 समस्त	5 न्यादर्श	2 न्यादर्श
2.	कैरियर डे	25 समस्त	5 न्यादर्श	5 न्यादर्श

सामान्य ज्ञान संकलन का स्तरानुसार निर्धारण

विवरण	श्रेष्ठ	औसत	सामान्य से कम
कुल छात्र 30 आधार – संकलन प्रकार, विविध क्षेत्रों की जानकारी, सुन्दरता एवं सजावट	7	20	3

दत्त विश्लेषण – उपरोक्त संकलित समस्त आंकड़ों का विश्लेषण किया गया जो इस प्रकार है–

1. छात्रों के सामान्य ज्ञान एवं बुद्धिमता स्तर पर आधारित पूर्व जॉच एवं पश्च जॉच का आयोजन किया गया तथा पाया गया कि पूर्व जॉच में जहॉ एक भी छात्र उत्कृष्ठ श्रेणी में नहीं था पश्च जॉच में 56.66 छात्र उत्कृष्ठ श्रेणी में रहे।
2. पूर्व जॉच में 6.66 छात्र बहुत अच्छा श्रेणी में 50 प्रतिशत औसत श्रेणी में एवं 43 प्रतिशत छात्र कमजोर श्रेणी में थे वे वश्च जॉच में गुणात्मक सुधार के साथ 23.33 प्रतिशत छात्र बहुत अच्छा श्रेणी 10 प्रतिशत छात्र औसत श्रेणी एवं इतने ही कमजोर श्रेणी में रहे।
3. इकाई परख के स्तरानुसार आकलन के विशषण करने पर यह पाया जाता है कि 5 इकाई परखों में उत्कृष्ठ श्रेणी में निरंतर बढ़ोतरी हुई जो 0 प्रतिशत से बढ़कर 60 प्रतिशत पहुंची अच्छा श्रेणी में छात्रों की संख्यां 16.53 प्रतिशत न्युनतम प्रारंभ में जो अंत में 40 प्रतिशत अधिकतम तक पहुंची। औसत छात्र प्रारंभ में 56.66 यानि आधे से अधिक थे वे शोध के उपरांत केवल 6.66 गये। इसी प्रकार कमजोर छात्रों की श्रेणी में प्रारंभिक प्रतिशत 26.66 प्रतिशत था जो अंत में केवल 6.66 प्रतिशत रह गया। यह छात्रों की गुणात्मक अभिवृद्धि को स्पष्ट इंगित करता है।
4. विविध अवसरों पर आयोजित क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें न्यादर्श के 30 में से 5 छात्रों ने प्रत्येक क्विज में भाग लिया। क्विज में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त विद्यार्थी प्रथम क्विज में 5 में से 40 प्रतिशत तथा दूसरी क्विज में 5 से 5 व शत प्रतिशत विद्यार्थी जो न्यादर्श के थे उन्होंने श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया।
5. इसी प्रकार न्यादर्श के 30 छात्रों से सामान्य ज्ञान संकलन पुस्तिका बनवाई गई। जिसका शोध के उपरांत स्तर के अनुसार वर्गीकरण किया गया। वर्गीकरण का आधार संकलन का स्तर, क्षेत्रों का चयन एवं सुन्दरता माना गया। इसमें 23.33 छात्रों का संकलन श्रेष्ठ स्तर का , 66.66 प्रतिशत छात्रों का संकलन औसत स्तर का एवं 10 प्रतिशत छात्रों का संकलन सामान्य से कम स्तर रहा।

निष्कर्ष – उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किये गए जो इस प्रकार है।

1. छात्रों को पाठ्यक्रम के ज्ञान के अतिरिक्त सामान्य एवं बुद्धिमता स्तर संबंधी जानकारी नियमित रूप से न केवल वे अपने पाठ्यक्रम के ज्ञान बेहतर ढ़ग से समझ पाते है अपितु उनमें कैरियर निर्माण एवं वर्तमान युग की प्रतिस्पर्धा का भी बोध होता है।
2. छात्रों में अखबार एवं पत्र–पत्रिकाओं को नियमित रूप से पढ़ने की आदत का विकास करने से उनमें स्वाध्याय, पठन, चिंतन मनन, सृजनात्मकता एवं रिक्त समय के सदुपयोग जैसे गुण विकसित होते है।
3. सामान्य ज्ञान संकलन पुस्तिका में अखबारों की कटिंग्स एवं विविध क्षेत्रों की जानकारी का संग्रह करने की प्रवृति से छात्रों में रचनात्मक प्रवृति का विकास होता है। साथ ही छात्रों को अभिव्यक्ति का एक माध्यम भी प्राप्त होता है।
4. वर्तमान युग की प्रतिस्पर्धा एवं श्रेष्ठ से श्रेष्ठम अभ्यर्थियों की हर क्षेत्र में चयन प्रणाली के बीच हम छात्र को पाठ्यक्रम के ज्ञान के साथ–साथ नियमित रूप से जीके तथा आई.क्यू. का अभ्यास करने की प्रवृति प्रदान कर उन्हें इस युग के योग्य बनने का अवसर मिलता है।

सुझाव –

1. प्रत्येक विद्यालय में प्रत्येक छात्र से इस प्रकार की सामान्य ज्ञान संकलन पुस्तिका बनवायी जाए।
2. छात्रों को अखबार एवं पत्र पत्रिकाएं पढ़ने हेतु प्रेरित किया जाय। अखबार में कौनसी खबरें कहॉ होती है ? यथा राष्ट्रीय, अन्तराष्ट्रीय, खेल, संस्कृति, स्थानीय तथा संपादकीय इत्यादि की जानकारी छात्रों को दी जाए।
3. विद्यालय में विविध अवसरों पर क्विज जैसी प्रतियोगिता का आयोजन किया जाए तथा श्रेष्ठ स्थान प्राप्त छात्रों को यथायोग्य पुरस्कार भी दिया जाए।

शैक्षिक उपादेयता –

1. छात्रों को सामान्य ज्ञान एवं बुद्धिमता स्तर संबंधी गतिविधियों का अभ्यास करवाने से वे अपने पाठ्यक्रम के विषयवस्तु को भी अच्छी तरह समझेगे एवं उनका शैक्षिक स्तर निश्चित रूप से बढेगा।
2. छात्रों में चिंतन एवं तर्क शक्ति के विकास से उनमें बौद्धिक विकास होगा एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी विकसित होगा।
3. छात्र अपने भविष्य के कैरियर के प्रति सजग होगें तथा उसी के अनुसार अपने विषयों के चुनाव करेगें एवं कैरियर में जी.के. तथा आई.क्यू. का उपयोग करेगे।
4. छात्रों में न केवल रचनात्मकता, सृजनात्मकता एवं संकरात्मकता का विकास होगा। अपीतु उनमें आत्मविश्वास, व्यक्तित्व निर्माण एवं प्रभावशाली अभिव्यक्ति भी विकसित होगी।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र 2021–22

अनुसंधानकर्त्ता–

श्री ओमप्रकाश भाकर, अध्यापक

रा.मा.विद्यालय, रायपुरिया, चूरू

शोध शीर्षक– '' कक्षा 5 के कुछ छात्रों में ज्यामितीय आकृति के कोणों के प्रकार की समझ न होने की समस्या का समाधान।''

शोध समस्या – आदिकाल से ही मानव विकास के क्रम में जाने–अनजाने में गणित का प्रयोग करता आया है। गणित दिन–प्रतिदिन की समस्याओं को सीखने, तर्को को समझने एवं तर्को को गढ़ने की ताकत पैदा करता है। गणित में अमूर्त चिन्तन की प्रधानता होती है। गणित के विचार केवल बनाने से या व्याख्या करने से ही विकसित नही होते है। बच्चें की अवधारणाओं की स्वयं अपनी रूपरेखा की आवश्यकता होती है। उन्हें ऐसे वातावरण की आवश्यकता होती है। जहॉ व समस्या हल करने की बोधगम्य विधि ढूंढ सके या पा सके। गणित विषय की प्रकृति अमूर्त होने के कारण बच्चों को

अवधारणाओं को समझने में कठिनाई होती है। यदि अमूर्त को मूर्त से जोड़कर सबोध प्रस्तुत किये जाये तो बच्चे उन्हें सहजता और सरलता से ग्रहण करते जाते है।

दैनिक जीवनोपयोगी कार्यो एवं गणित में ज्यामीतिय आकृति से संबंधित समस्याओं का अपना विशेष स्थान है। ज्यामीतिय आकृतियों की समझा विकसित करने व उन पर आधारित समस्याओं को हल करने हेतु काणों का ज्ञान व उनका मापन अत्यन्त आवश्यक व महत्वपूर्ण कारण है। शोधकर्ता द्वारा राजकीय माध्यमिक विद्यालय, रायपुरिया कक्षा–5 में ज्यामीतिय आकृतियों के शिक्षण में पाया गया कि कुछ बच्चें कोंणो की समझ व कोंणो के मापन के न्यूनतम अधिगम स्तर तथा आवश्यक दक्षता प्राप्त करने में सफल नही हुए हों जिस कारण वे विभिन्न ज्यामीतिय आकृतियों को कांणो की समझ व उनके मापन का ज्ञान न होने के कारण संबंधित संबोध को सीचा पाने में असमर्थ है। अतः वांछित अधिगम स्तर प्राप्त करवाने हेतु शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत क्रियात्मक शोध सम्पन्न किया गया।

समस्या सीमांकन – राजकीय माध्यमिक विद्यालय, रायपुरिया के कक्षा 5 के छात्रों तक सीमित है।

शोध उद्देश्य –

1. पटरी व चांदे की सहायता से कोण बना सकेंगे।
2. कोणो के प्रकार सीख सकेंगे।
3. अपने दैनिक जीवन में कोणो का प्रयोग कर सकेंगे।
4. चांदे की सहायता से कोणो को माप सकेंगे।
5. गणित विषय में रूचि व जिज्ञासा का विकास होगा।

क्षेत्र – शैक्षिक।

शोध समस्या के कारण एवं साक्ष्य –

क्र.स.	कारण	साक्ष्य	अध्यमा अनुमान	शोधकर्ता का नियंत्रण है या नही
1.	कोणो के प्रकार की सीख न हो पाना	कक्षा में शिक्षण कार्य करते समय	तथ्य	नियंत्रण में है।
2.	कोणो का सही मापन न कर पाना	शिक्षण कार्य के दौरान माप करके देखना	तथ्य	नियंत्रण में है।
3.	चांदा का सही प्रयोग न कर पाना	कक्षा में प्रयोग करके देखा	तथ्य	नियंत्रण में है।
4.	चांदे पर बने बांये तरफ के कोण में अन्तर न समझ पाना	कक्षा में प्री–टेस्ट द्वारा	तथ्य	नियंत्रण में है।

क्रियात्मक परिकल्पनाएं –

1. कोणो के सही मापन न कर पाने की समस्या का मूल मुख्यतः बच्चों को कोणों के प्रकार की जानकारी न हो पान है। चांदे में दोनो ओर 0^0 से 180^0 तक की माप तो कोणों के प्रकार के

ज्ञान के अभाव में बालक सही माप नहीं कर पा रहे है। जैसे 60^0 के कोण की माप 120^0 लिख रहे हो।

2. ज्यामीतिय आकृतियों से बने फ्लैश कार्ड, तिलियों से विभिन्न प्रकार के कोण बनाकर उनके प्रकार को चिहिन्त कर पाने में सक्षम बनाया जाना है।
3. चांदे द्वारा कोणों का सही मापन सिखाने हेतु कोण पर चांदे पर अंकित अंशो को पढ़ने की विधि के अभ्यास की गतिविधि व्यक्तिगत रूप एवं समूह में कार्यवाही की जायेगी।
4. क्रियात्मक शोध में सोपान आकलन किया जायेगा। एवं पुनः सीख पाने वाले बच्चों हेतु उपयुक्त कार्ययोजना बनाकर तदनुसार सीखने–सीखाने की प्रकिया की जायेगी।
5. कक्षा में अर्जित ज्ञान को अनेक घर परिवेश को जोड़ने के लिए प्रोजेक्ट कार्य दिया जायेगा।
6. टी.एल.एम. सामग्री का निर्माण छात्र/छात्राओं के द्वारा समूह में करवाया जाएगा।

क्रियात्मक परिकल्पना के परीक्षण हेतु कार्य योजना –

पूर्व परीक्षण

क्र.स.	छात्र/छात्रा का नाम	पूर्णांक	प्राप्तांक
1.	अनु	20	7
2.	द्रौपती	20	6
3.	सरोज	20	4
4.	पूजा	20	8
5.	ओमपाल	20	5
6.	ओमविकास	20	6
7.	आशीष	20	7

कार्ययोजना का क्रियान्वय –

गतिविधि 01 – दो तीलियों के एक–एक सिरो को एक पिन की सहायता से इस प्रकार जोड़ा कि तीलियां घड़ी की सूई की भांति चल सके, इस प्रकार के चार उपकरण बना लिये। सभी बच्चों को दो समूह में विभक्त कर सिखाने की गतिविधि प्रारम्भ हुई दोनो ग्रुप में तीलियों से बने दो–दो उपकरण दिये गये।

गतिविधि 02 – दोंनो तीलियों को इस तरह रखा कि उपरी तीली निचली तीलि को पूर्णतः ढ़क लें इस स्थिति में दोंनो तीलियों के बीच बना कोण का चित्र भी श्यामपट्ट पर भी बनाया जायेगा। दोंनो समूहों में कोणों की माप करने को कहा गया। छात्रो ने चांदे की सहायता से कोण की माप 0^0 तो कुछ छात्रों ने 180^0 बता रहें है। अतः छात्रों को स्पष्टता से बताया गया कि दोंनो तीलियों य श्यामपट्ट पर रेखाखण्डों के बीच कोई कोण नही बन रहा हैं। अर्थात् यही कोण 0^0 का हैं। बच्चों से विभिन्न स्थितियों में 0^0 के कोंण बनाकर संबोध को स्पष्ट किया गया।

गतिविधि 03 – एक तीलि को दुसरी तीलि पर लम्बवत् 90^0 रखकर उनके बीच बने कोण को बच्चों से नपवाया गया। चूंकि चांदे पर 90^0 का मान बांये व दायें से अंकित मानों में एक ही है। अतः बच्चों ने माप को 90^0 पढ़ा व लिखा। 90^0 के कोण को समकोण कहते है।

उदाहरण– दीवार व फर्श के बीच बना कोण, बिजी का खम्भा व भूमि के बीच बना कोण।

गतिविधि 04 – 0^0 व 90^0 के बीच कई प्रकार के कोण बनाये गये, बच्चों से नपवाये गये। बच्चें माप में 10^0 को 17^0, 4^0 को 135^0, 60^0 को 120^0 आदि पढ़ व लिख रहे थे। यह गलती बच्चें में चांदे के बांयी व दांयी ओर से अंकित अंशो के एक ही स्थान पर लिखे दो मानों के कारण हो रही है। जिसके कारण बच्चों को न्यूनकोण स्थिति का ज्ञान न होना है।

1. बच्चों को बताया गया कि सभी कोण 0^0 से अधिक व 90^0 से कम है। अतः ये कोण न्यूनकोण है।
2. उदाहरण किताब के पत्तों के बीच बने कोण पर छत व सीढ़ियों के बीच बने कोण घड़ी की घंटे व मिनट के बीच बने कोण आदि।
3. अब बच्चों को न्यून कोण की अवधारणा स्पष्ट हो गयी हैं।
4. बच्चें विभिन्न प्रकार के न्यूनकोण तीलियों की सहायता से बना रहे हैं व उनके चिह्न श्यामपट्ट व कॉपी पर बना रहे हैं।
5. बच्चें समझ चुके है कि 90^0 से कम कोणा न्यून कोण होता है।
6. चांदे से मान में समान स्थान पर दो विभिन्न मापने में से 90^0 से कम वाली माप को पढ़ व लिख रहे है।

गतिविधि 05 – छात्र/छात्राओं को दो समूह में बांट कर उन्हे चार्ट, पेपर, गत्ता, कैंची, स्केल, पेन्सिल, चांदा, तीलियां, फेविकोल आदि उपलब्ध करवाये गये, प्रत्येक समूह को 90^0 से 180^0 के बीच कई प्रकार कोण बनाने को कहा गया और फिर उनकी माप लिखावाया गया अतः बच्चों को बताया गया कि 90^0 से अधिक व 180^0 से कम कोण को अधिक कोण कहते है। बच्चे अधिक कोण की अवधारणा को समझ गयी। व चांदे की सहायता से विभिन्न कोणो की माप पढ़ व लिख रहे है।

गतिविधि 06 – छात्रों को दो तीलियों को इस प्रकार से जोड़ने को कहा गया कि दोनो का मुंह विपरीत दिशा में रहे। तब छात्रों से पूछा गया कि इनके बीच कितने अंश का कोण बना, कुछ बच्चों ने 0^0 बताया तो कुछ बच्चों ने 180^0 का कोणा बताया। फिर बच्चों को गतिविधि 2 को स्पष्ट दुबारा करने को कहा गया तब बच्चे स्पष्ट से समझ गये कि दोनो तीलियों के बीच में 180^0 का कोण बना है।

संबोधन – बच्चों को बताया गया कि किन्हीं दो रेखाखण्ड के एक ही बिन्दु से दिशा की ओर बड़े कोण 180^0 का होता है। जिसे ऋजु कोण या सरलकोण कहते है।

गतिविधि 07 – इसी प्रकार 180^0 से अधिक व 360^0 से कम के कोण को वृहत कोण कहते है। इसे बच्चों को 180^0 से अधिक व 360^0 से कम कोण लाने को कहेंगे।

गतिविधि 08 – बच्चों को सम्पूर्ण कोण की अवधारणा को के लिए दीवार घड़ी की मिनट की सूई को झूका करके दिखाओ और बतायेंगे कि जब सूई पूरा एक चक्कर लगा करके पुनः अपने स्थान में आ जाते है तब सम्पूर्ण कोण बन जाता हैं। जो यह 360^0 का होता है बच्चों की तीलियों की सहायता से सम्पूर्ण कोण बनाने को कहेंगे।

पश्च परीक्षण –

क्र.स.	छात्र/छात्रा का नाम	पूर्णांक	प्राप्तांक

1.	अनु	20	20
2.	द्रौपती	20	20
3.	सरोज	20	20
4.	पूजा	20	20
5.	ओमपाल	20	20
6.	ओमविकास	20	20
7.	आशीष	20	20

वर्ग अन्तराल पश्च परीक्षण के आधार पर–

प्राप्तांक	बच्चों की संख्यां
0–4	0
4–8	0
8–12	0
12–16	0
16–20	7

आंकड़ों का विश्लेषण –

वर्ग अन्तराल प्राप्तांक	बच्चों की संख्यां पूर्व परीक्षा	प्रतिशत	बच्चों की संख्यां पश्चात परीक्षण	प्रतिशत
0–2	0	0	0	0
2–4	0	0	0	0
4–6	2	28.57	0	0
6–8	4	57.14	0	0
8–10	1	14.29	0	0
10–12	0	0	0	0
12–14	0	0	0	0
14–16	0	0	0	0
16–18	0	0	0	0
18–20	0	0	7	100
योग	7	100	7	100

परिणाम – क्रियात्मक शोध के पश्चात् प्राप्त परिणामों व अनुभवों के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रत्येक बच्चों में सीखने की क्षमता होती है वस्तु सीखने के तरीके अलग–अलग हो सकते है। यदि बच्चों को उनकी आवश्यकतानुसार अलग–अलग गतिविधियों द्वारा खुद करके सीखने का मौका दिया जाये तथा उनके कक्षाकक्ष के ज्ञान को व्यावहारिक ज्ञान से जोड़ दिया जाये तो बच्चों में सकारात्मक परिवर्तन आना निश्चित ही है।

तुलनात्मक परिणाम का अध्ययन –

क.स	छात्र / छात्रा का नाम	प्री–टेस्ट			पोस्ट–टेस्ट		
		प्रारम्भिक स्थिति			द्वितीय स्थिति		
		पूर्णांक	प्राप्तांक	प्रतिशत	पूर्णांक	प्राप्तांक	प्रतिशत
1.	अनु	20	7	35	20	20	100
2.	द्रौपती	20	6	30	20	20	100
3.	सरोज	20	4	20	20	20	100
4.	पूजा	20	8	40	20	20	100
5.	ओमपाल	20	5	25	20	20	100
6.	ओमविकास	20	6	30	20	20	100
7.	आशीष	20	7	35	20	20	100

निष्कर्ष – प्राप्त आंकड़ों के आधार यह निष्कर्ष कि विभिन्न शिक्षण विधियों एवं टी.एल.एम. का प्रयोग कर ज्यामितीयां आकृतियों कोण आदि को सीखने से छात्रों कोण सीखने संबंधी समस्या का आसानी से समाधान किया जा सका है।

शैक्षिक निहितार्थ – मैने समस्या के कारणों को जानकार उसका समाधान किया है कोई समस्या का कारण जानकर उस विभिन्न क्रियाएं करके अन्य विद्यालय भी अपनी शिक्षण संबंधी समस्यां का समाधान कर सकते है।

पूर्व परीक्षण प्रश्न पत्र

पूर्णांक – 20

प्र. 1. 5 सेमी. की एक रेखाखण्ड खीचिए ?

प्र. 2. 10 सेमी. रेखाखण्ड पर 5 सेमी. रेखाखण्ड लम्बवत् खीचिए ?

प्र. 3. निम्न कोणों की माप को चांद से जॉचिए ?

प्र. 4. 90^0 के कोण को क्या कहते है ?

प्र. 5. ऋजु कोण कितने डिग्री कोण को होता है ?

प्र. 6. न्यूनकोण कितने डिग्री से लेकर कितने डिग्री तक होता है ?

प्र. 7. पटरी व चांदे की सहायता से कोण बनाईये ?

45^0 180^0 120^0 15^0

प्र. 8. अधिक कोण कितने कोण का होता है ?

प्र. 9. चांदे की सहायता से दो न्यूनकोण बनाइये ?

प्र. 10. निम्न में से न्यूनकोण के गोला लगाऐं।

90^0 120^0 60^0 54^0 75^0 180^0